

राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता

स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः

(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

न याच्छा न बलात्कारः, उत्तमः क्वापि मन्यते ।

पुस्तकं वृत्तपत्रं वा, किमेवं हन्त ! पठ्यते ? ॥२४०॥

याचना या बलात्कार किसी भी विषय में उत्तम नहीं माना जाता तो पुस्तक या समाचार-पत्र को क्यों इस तरह या छीन कर पढ़ा जाता है ?

Neither soliciting nor rape are considered good topics. Why then is there demand for them to be written about in books or newspapers?

नरजन्म गृहीत्वा यो, विशिष्टं कर्म नाकरोत् ।

तज्जन्म व्यर्थमेवास्ति, भू - भारस्य स वर्धकः ॥२४१॥

जिसने मनुष्य का जन्म लेकर कोई विशिष्ट कार्य नहीं किया तो उसका जन्म व्यर्थ ही है और वह पृथ्वी के भार को बढ़ाने वाला है ।

The birth of the one who did not do any outstanding work, although born as a human, is wasted and is just like a weight on this earth.

नव-नवाः समस्या याः, प्रजायते विभीषणाः ।

ता अवश्यं समाधेयाः, पक्षद्वय-हिते ननु ॥२४२॥

जो भीषण नयी नयी समस्यायें पैदा होती हैं उनका दोनों पक्षों के हित में अवश्य समाधान करना चाहिये ।

New horrible/gruesome problems should be solved beneficially for both parties.

न विपक्षी विपक्षीति, समुपेक्ष्यः कदाचन ।

तस्यापि मार्ग-निर्देशो, हितार्थैव भवेत् सदा ॥२४३॥

विपक्षी को विपक्षी मान कर उसकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये । उस विपक्षी का किया गया मार्गदर्शन सदा हितकर ही होता है ।

The opposing party should never be ignored just because it's the opposing party. The guidance shown by the opposing party is always beneficial.

न सदाचारिताऽऽगच्छेत्, स्वां भाषां संस्कृतिं विना ।

न सदाचारिता यत्र, सुखं शान्तिश्च तत्र न ॥२४४॥

अपनी भाषा और संस्कृति को अपनाये बिना सदाचारिता नहीं आती है । जहाँ सदाचारिता नहीं होती वहाँ सुख और शान्ति भी नहीं होती ।

Morality cannot come without adopting its own language and culture. And, without morality, there is no happiness and peace.

नहि मातृ-समा देवी, देवः पितृ समो नहि ।

परित्यज्य तयोः सेवां, पर-सेवा वृथा न किम् ? ॥२४५॥

माता के समान देवी नहीं और पिता के समान देवता भी नहीं है । माता पिता की सेवा तयार कर दूसरों की सेवा करना क्या व्यर्थ नहीं है ?

There is no goddess, like a mother nor god, like a father. Isn't it meaningless to serve others and not one's parents?

नाट्यशाला जगत्येषा, जीवो नटश्च दर्शकः ।

कार्यं कृत्वाऽत्र नाल्पं स, तिष्ठतीति प्रतिष्ठते ॥२४६॥

यह संसार एक प्रकार की नाट्यशाला है। इस संसार में उत्पन्न प्राणी इस नाट्यशाला का नट भी है और दर्शक भी है। इस नाट्यशाला में अपना काम पूरा करके थोड़ा सा भी नहीं ठहरता और प्रस्थान कर जाता है ।

This world is like a theatre. Whoever is born in this theatre is also an actor and a viewer. One does not wait even for a moment after the play but leaves immediately.

